

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 25-10-2024

विषय सूची

सिविल सेवकों के लिए क्षमता मॉडल

सड़क सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग

विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा 2024

डिजिटल अनुक्रम सूचना (DSI) के उपयोग के लिए लाभ साझाकरण

उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट 2024 (Emissions Gap Report 2024)

अंतरिक्ष में निजी क्षेत्र की भागीदारी

संक्षिप्त समाचार

सिल्क रूट पर उज्बेकिस्तान में दो नए शहरों की खोज

किचूर विजयोत्सव के 200 वर्ष

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना अगले मुख्य न्यायाधीश नियुक्त

ग्राम पंचायत स्तर पर मौसम पूर्वानुमान

विश्व पोलियो दिवस

शिक्षा पर भारत का व्यय: यूनेस्को रिपोर्ट

गृह मंत्रालय ने 'साइबर कमांडो की विशेष शाखा' बनाने के लिए परामर्श जारी किया

सिम्बेक्स 2024 (SIMBEX 2024)

जलकुंभी (Water Hyacinth)

सिविल सेवकों के लिए क्षमता मॉडल

सन्दर्भ

- क्षमता निर्माण आयोग (CBC) ने सिविल सेवकों के लिए कर्मयोगी योग्यता मॉडल विकसित किया है।

परिचय

- यह व्यवहारिक और कार्यात्मक दक्षताओं का एक ढांचा है, जिसे एक कर्मचारी से एक कर्मयोगी (समर्पित कार्यकर्ता) बनने में सहायता के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- मॉडल का उद्देश्य अधिकारियों की उनकी दक्षताओं के आधार पर भूमिकाओं में तैनाती को अनुकूलित करना है, जिन्हें एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण (iGOT) पोर्टल पर पाठ्यक्रमों से भी जोड़ा गया है।

योग्यता मॉडल के घटक

- मॉडल में 34 दक्षताएँ शामिल हैं, जिन्हें व्यवहारिक और कार्यात्मक के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- व्यवहारिक दक्षताएँ:** 13 व्यवहारिक दक्षताएँ हैं, जिन्हें आगे दो उप-श्रेणियों में विभाजित किया गया है;
 - मुख्य दक्षताएँ
 - नेतृत्व दक्षताएँ
- मुख्य व्यवहारिक दक्षताओं में शामिल हैं: आत्म-जागरूकता, व्यक्तिगत प्रभावशीलता, रचनात्मकता और नवाचार तथा रणनीतिक नेतृत्व।
- ये दक्षताएँ चार संकल्पों से प्रेरित हैं जिन्हें प्रत्येक सार्वजनिक अधिकारी को अपनाना चाहिए: विकास, गर्व, कर्तव्य और एकता।
- कार्यात्मक दक्षताएँ:** 21 कार्यात्मक दक्षताएँ हैं, जो शासन में विशिष्ट भूमिकाओं को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए आवश्यक कौशल पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- मुख्य कार्यात्मक दक्षताओं में शामिल हैं: नागरिक-केंद्रितता, नीति वास्तुकला, डिजिटल प्रवाह, वित्तीय प्रबंधन और डेटा विश्लेषण।

मिशन कर्मयोगी राष्ट्रीय कार्यक्रम

- यह सिविल सेवकों के प्रशिक्षण के लिए 2020 में शुरू किया गया भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सिविल सेवाओं को 'नियम आधारित' से 'भूमिका आधारित' कार्यप्रणाली और नागरिक केंद्रित बनाना है।
- मिशन कर्मयोगी के निम्नलिखित छह स्तंभ हैं;
 - नीतिगत ढांचा, संस्थागत ढांचा,
 - योग्यता ढांचा,
 - डिजिटल लर्निंग ढांचा (एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण कर्मयोगी प्लेटफॉर्म (iGOT-कर्मयोगी),
 - इलेक्ट्रॉनिक मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (e-HRMS), और
 - निगरानी और मूल्यांकन ढांचा।

मिशन कर्मयोगी की मुख्य विशेषताएं

- क्षमता निर्माण आयोग (CBC):** CBC क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की निगरानी और समीक्षा करता है, उन्हें मिशन कर्मयोगी के उद्देश्यों के साथ जोड़ता है।
 - CBC की स्थापना अप्रैल 2021 में की गई थी और इसमें निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाज के प्रतिनिधित्व के साथ विशिष्ट रूप से कर्मचारी हैं।

- **iGOT (एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण) प्लेटफॉर्म:** यह डिजिटल प्लेटफॉर्म कभी भी, कहीं भी प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिससे सिविल सेवकों को उनकी भूमिकाओं और कौशल अंतराल के आधार पर व्यक्तिगत शिक्षण पथ तक पहुँचने में सहायता मिलती है।
- **वार्षिक क्षमता निर्माण योजनाएँ (ACBP):** प्रत्येक सरकारी विभाग अपनी प्राथमिकताओं और उद्देश्यों के साथ संरक्षण में अपनी क्षमता निर्माण योजनाएँ बनाता एवं लागू करता है।
- **भूमिका-आधारित योग्यता ढाँचा:** प्रशिक्षण सिविल सेवकों में भूमिका-आधारित योग्यताएँ विकसित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो उनके संबंधित कार्यों के लिए आवश्यक विशिष्ट कौशल पर ध्यान केंद्रित करता है।

एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण (iGOT) पोर्टल

- इसे सभी सरकारी कर्मचारियों की क्षमता निर्माण के लिए डिजिटल इंडिया स्टैक के एक अभिन्न अंग के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- इसका उद्देश्य लगभग 2.0 करोड़ उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए 'कभी भी-कहीं भी-किसी भी डिवाइस' पर शिक्षा प्रदान करना है, जो अब तक पारंपरिक उपायों के माध्यम से प्राप्त करना असंभव था।
- इसे FRAC पर आधारित सामग्री के लिए एक जीवंत और विश्व स्तरीय बाज़ार के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई है।
- एक मजबूत ई-लर्निंग सामग्री उद्योग द्वारा समर्थित सामग्री को व्यक्तिगत सरकारी मंत्रालयों या संगठनों द्वारा क्यूरेट किया जा सकता है।

निष्कर्ष

- मिशन कर्मयोगी का उद्देश्य भारत की सिविल सेवाओं को बेहतर ढंग से तैयार और नागरिक-उन्मुख बनाना है, जो अंततः राष्ट्र के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों में योगदान देगा।
- यह एक परिवर्तनकारी पहल है जो सिविल सेवकों को भारत की प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाती है। नागरिक-केंद्रित, तकनीक-प्रेमी कर्मयोगियों को विकसित करके, हम 2047 तक विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

Source: [IE](#)

सड़क सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग

सन्दर्भ

- केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री ने ट्रैफिक इंफ्राटेक एक्सपो के 12वें संस्करण को संबोधित किया।
 - उन्होंने सड़क सुरक्षा में सुधार और परिवहन क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर बल दिया।

परिचय

- भारत में प्रत्येक वर्ष करीब 5 लाख दुर्घटनाएं होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न मृत्यु होती हैं।
 - इनमें से आधे से ज़्यादा दुर्घटनाएं 18-36 वर्ष की आयु वर्ग में होती हैं।
 - सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाला आर्थिक हानि देश के सकल घरेलू उत्पाद का 3% होने का अनुमान है।

- सरकार ने तकनीकी समाधान विकसित करने में सहयोग करने के लिए निजी क्षेत्र से विशेषज्ञों को नियुक्त करने का निर्णय किया है।
 - यह स्टार्टअप और उद्योग जगत के नेताओं के प्रस्तावों का मूल्यांकन करेगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि सर्वोत्तम विचारों को लागू किया जाए।
 - समिति को तीन महीने के अंदर अपने मूल्यांकन को अंतिम रूप देने का निर्देश दिया गया है।

परिवहन क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का उपयोग

- **यातायात प्रबंधन:** AI सिस्टम सिग्नल टाइमिंग को अनुकूलित करने, भीड़भाड़ को कम करने और समग्र यातायात प्रवाह को बेहतर बनाने के लिए वास्तविक समय के यातायात डेटा का विश्लेषण करते हैं।
 - इससे ग्रीडलॉक या अप्रत्याशित यातायात पैटर्न के कारण होने वाली दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है।
- **पूर्वानुमानित विश्लेषण:** ऐतिहासिक दुर्घटना डेटा का विश्लेषण करके, AI उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों और समय की पहचान कर सकता है, जिससे अधिकारियों को लक्षित सुरक्षा उपायों को लागू करने में सहायता मिलती है।
- **चालक सहायता प्रणाली:** लेन प्रस्थान चेतावनी, टकराव से बचाव और अनुकूली क्रूज नियंत्रण जैसी सुविधाएँ प्रदान करने के लिए AI को वाहन प्रणालियों में एकीकृत किया जाता है।
- **आपातकालीन प्रतिक्रिया:** AI सिस्टम आपातकालीन वाहनों के लिए मार्गों को अनुकूलित कर सकते हैं, दुर्घटनाओं के दौरान त्वरित प्रतिक्रिया समय सुनिश्चित कर सकते हैं, जो जीवन बचाने के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।
- AI के माध्यम से यातायात उल्लंघनों की पहचान करने से अधिकारी दंड को सटीक रूप से लागू कर सकते हैं।
- सैटेलाइट टोल सिस्टम की खोज सहित टोल संग्रह विधियों को अपग्रेड करने से दक्षता में सुधार होगा और टोल संग्रह में पारदर्शिता सुनिश्चित होगी।

चुनौतियां

- **बुनियादी ढांचे की सीमाएँ:** विभिन्न क्षेत्रों में AI तकनीकों को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे, जैसे कि विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी और पर्याप्त सेंसर नेटवर्क का अभाव है।
- **डेटा गोपनीयता की चिंताएँ:** बड़ी मात्रा में यातायात और व्यक्तिगत डेटा का संग्रह एवं विश्लेषण गोपनीयता तथा डेटा सुरक्षा के बारे में चिंताएँ बढ़ाता है।
- **डेटा की गुणवत्ता:** भारत में यातायात और दुर्घटना डेटा की गुणवत्ता में काफ़ी भिन्नता है, जिससे विश्वसनीय AI सिस्टम विकसित करना मुश्किल हो जाता है।
- **वर्तमान सिस्टम के साथ एकीकरण:** वर्तमान यातायात प्रबंधन सिस्टम और नियामक ढाँचों के साथ AI समाधानों को एकीकृत करना जटिल हो सकता है और इसके लिए महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है।
- **कौशल अंतराल:** भारत में AI और डेटा एनालिटिक्स में कुशल व्यावसायिकों की कमी है।
 - यह AI सिस्टम को प्रभावी ढंग से विकसित करने, लागू करने और बनाए रखने की क्षमता को सीमित करता है।
- **नैतिक विचार:** यातायात प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में AI की तैनाती से नैतिक प्रश्न उठते हैं, जैसे एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह और विफलताओं या दुर्घटनाओं के मामले में जवाबदेही।

आगे की राह

- **डेटा मानकीकरण:** विभिन्न हितधारकों के बीच डेटा संग्रह और साझा करने के लिए मानक प्रोटोकॉल स्थापित करें।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** AI समाधान विकसित करने के लिए संसाधनों, विशेषज्ञता और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए सरकारी एजेंसियों, निजी कंपनियों तथा शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करें।
- **कौशल विकास कार्यक्रम:** AI, डेटा एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग में कुशल कार्यबल बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लागू करें।
- **पायलट परियोजनाएँ:** वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों में AI अनुप्रयोगों का परीक्षण करने के लिए चुनिंदा शहरों में पायलट परियोजनाएँ शुरू करें।
- **नैतिक दिशा-निर्देश:** निष्पक्ष व्यवहार और सार्वजनिक विश्वास सुनिश्चित करने के लिए पारदर्शिता, जवाबदेही तथा पूर्वाग्रह शमन पर ध्यान केंद्रित करते हुए AI विकास एवं परिनियोजन के लिए नैतिक दिशा-निर्देश स्थापित करें।
- **प्रतिक्रिया तंत्र:** AI प्रणालियों और सड़क सुरक्षा पहलों पर सार्वजनिक प्रतिक्रिया के लिए चैनल बनाएँ, जिससे उपयोगकर्ता के अनुभवों तथा चिंताओं के आधार पर निरंतर सुधार हो सके।

Source: PIB

विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा 2024

सन्दर्भ

- हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ - विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा (ITU-WTSA 2024) नई दिल्ली में संपन्न हुई।

WTSA क्या है?

- WTSA अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ के मानकीकरण कार्य के लिए शासी सम्मेलन है, जो प्रत्येक चार वर्ष में आयोजित किया जाता है।
- यह पहली बार है कि ITU-WTSA भारत और एशिया-प्रशांत में आयोजित किया जा रहा है।
- यह एक महत्वपूर्ण वैश्विक आयोजन है, जिसमें दूरसंचार, डिजिटल और ICT क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले 190 से अधिक देशों के 3,000 से अधिक उद्योग के नेता, नीति-निर्माता तथा तकनीकी विशेषज्ञ एक साथ आए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU)

- यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के लिए संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है।
- संचार नेटवर्क में अंतर्राष्ट्रीय संपर्क को सुविधाजनक बनाने के लिए 1865 में स्थापित।
- भारत 1869 से ITU का सदस्य रहा है।
- **कार्य:** यह वैश्विक रेडियो स्पेक्ट्रम और उपग्रह कक्षाओं का आवंटन करता है।
 - यह तकनीकी मानकों को विकसित करता है जो नेटवर्क तथा प्रौद्योगिकियों को निर्बाध रूप से आपस में जोड़ना सुनिश्चित करते हैं, और विश्व भर में वंचित समुदायों तक ICT की पहुँच में सुधार करने का प्रयास करते हैं।

महत्व

- ये पहल न केवल दूरसंचार/सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के क्षेत्रों में अग्रणी के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करती हैं, बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मजबूत डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के विजन के साथ भी सहज रूप से संरेखित हैं, जैसा कि भारत की G-20 अध्यक्षता के दौरान व्यक्त किया गया था।
- डिजिटल प्रौद्योगिकी के लिए वैश्विक ढांचा बनाने पर यह जोर वैश्विक शासन के लिए इन संकल्पों के महत्व को रेखांकित करता है।
- ये संकल्प प्रधानमंत्री मोदी के डिजिटल इंडिया के चार स्तंभों - कम कीमत वाले उपकरण, देश के प्रत्येक स्थान में डिजिटल कनेक्टिविटी की व्यापक पहुंच, आसानी से सुलभ डेटा और 'डिजिटल फर्स्ट' के लक्ष्य के साथ भी संरेखित हैं।

कार्यक्रम की मुख्य बातें

- **भारत 6G गठबंधन:** अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों के साथ महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए, जो वैश्विक 6G पेटेंट में भारत के 10% योगदान के वादे की दिशा में एक कदम है।
- **शैक्षणिक जुड़ाव:** 15वें ITU कैलिडोस्कोप सम्मेलन में रिकॉर्ड पेपर प्रस्तुत किए गए, जो डिजिटल बुनियादी ढांचे के भविष्य में वैश्विक रुचि को दर्शाता है।
- **लिंग संतुलन को बढ़ावा देना:** इस कार्यक्रम में अभूतपूर्व महिला भागीदारी का जश्न मनाया गया, जिसमें जिनेवा के बाहर आयोजित WTSA5 में 26% की उच्चतम महिला भागीदारी के साथ दूरसंचार में लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया गया (जिनेवा 2022 में, यह 32% थी)

केलिडोस्कोप 2024 सम्मेलन

- 15वां केलिडोस्कोप अकादमिक सम्मेलन डिजिटल परिवर्तन और दूरसंचार में नवाचार तथा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में सामने आया है।
- यह ITU द्वारा आयोजित किया जाता है, और 5G, AI, IoT, क्वांटम संचार और अन्य परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों में अत्याधुनिक विकास पर चर्चा करने के लिए शिक्षा, उद्योग एवं सरकार के सबसे प्रतिभाशाली दिमागों को एक साथ लाता है।
- **थीम:** एक सतत विश्व के लिए नवाचार और डिजिटल परिवर्तन।

ITU-WTSA 2024 में अपनाए गए संकल्प

- भारत द्वारा प्रमुख प्रस्ताव;
 - डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना पर मानकीकरण गतिविधियों को बढ़ाने पर एक नया संकल्प,
 - दूरसंचार/सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के समर्थन में AI प्रौद्योगिकियों पर ITU दूरसंचार मानकीकरण क्षेत्र की मानकीकरण गतिविधियों पर एक नया संकल्प।
- अन्य नए ITU-T संकल्पों में शामिल हैं;
 - सतत डिजिटल परिवर्तन पर मानकीकरण गतिविधियों को बढ़ाना,
 - मेटावर्स मानकीकरण को बढ़ावा देना और मजबूत करना,
 - वाहन संचार के लिए मानकीकरण गतिविधियों को बढ़ावा देना और मजबूत करना।

Source: [PIB](#)

डिजिटल अनुक्रम सूचना (DSI) के उपयोग के लिए लाभ साझाकरण

सन्दर्भ

- जैव विविधता सम्मेलन (CBD) के 16वें सम्मेलन (COP16) में आनुवंशिक संसाधनों की डिजिटल अनुक्रम सूचना (DSI) के उपयोग के लिए लाभ-साझाकरण की बहुपक्षीय प्रणाली जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

परिचय

- जैव विविधता संरक्षण और वैज्ञानिक अनुसंधान में आनुवंशिक संसाधनों पर डिजिटल अनुक्रम सूचना (DSI) आवश्यक हो गई है।
- DSI जीवों के डिजिटलीकृत आनुवंशिक डेटा को संदर्भित करता है, जिसका उपयोग प्रायः कृषि, फार्मास्यूटिकल्स और जैव विविधता में अनुसंधान के लिए किया जाता है।
- हालाँकि, DSI पर बढ़ती निर्भरता के साथ, उचित लाभ-साझाकरण के बारे में प्रश्न, विशेष रूप से स्थानीय समुदायों के लिए जिनके क्षेत्रों में मूल्यवान जैव विविधता है, प्रमुखता प्राप्त कर चुके हैं।

डिजिटल अनुक्रम सूचना(DSI) क्या है?

- DSI में जीवों के DNA, RNA, या प्रोटीन से आने वाले आनुवंशिक अनुक्रमों का डिजिटल प्रतिनिधित्व शामिल है।
- यह शोधकर्ताओं को जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र का डिजिटल रूप से अध्ययन करने, भौतिक नमूनों की आवश्यकता के बिना आनुवंशिक संरचना का विश्लेषण करने तथा आनुवंशिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में प्रगति को गति देने की अनुमति देता है।
- DSI डेटा रोगजनक संरचनाओं को समझने, दवाओं को विकसित करने और संरक्षण प्रयासों में सहायता करने में मदद कर सकता है।

लाभ

- त्वरित अनुसंधान:** DSI विश्व भर के वैज्ञानिकों और संस्थानों के लिए सुलभ आनुवंशिक जानकारी प्रदान करके तेजी से अनुसंधान को सक्षम बनाता है।
- संरक्षण और जैव विविधता अध्ययन:** DSI जैव विविधता को समझने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेष रूप से गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों के लिए तथा प्रजातियों के विलुप्त होने की रोकथाम का समर्थन करता है।
- फार्मास्यूटिकल्स और कृषि:** DSI की डिजिटल प्रकृति पादप आनुवंशिकी और संभावित दवाओं पर अनुसंधान को सक्षम बनाती है, जिससे आनुवंशिक संसाधनों पर निर्भर उद्योगों को लाभ होता है।
- डेटा साझाकरण और सहयोग:** DSI डेटाबेस, जो प्रायः सार्वजनिक रूप से सुलभ होते हैं, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देते हैं, जिससे कुशल ज्ञान साझा करने और वैश्विक अनुसंधान पहलों में योगदान करने की अनुमति मिलती है।

DSI की चुनौतियाँ

- लाभ-साझाकरण ढाँचे का अभाव:** विकासशील देशों का तर्क है कि DSI तक खुली पहुंच विकसित देशों को मूल संसाधन-धारक देशों या स्थानीय समुदायों को उचित मुआवजा दिए बिना लाभ के लिए आनुवंशिक डेटा का उपयोग करने की अनुमति देती है।

- **बौद्धिक संपदा मुद्दे:** DSI आनुवंशिक डेटा से विकसित उत्पादों पर कंपनियों या देशों द्वारा पेटेंट कराने की ओर ले जा सकता है, जिससे बौद्धिक संपदा और स्रोत देशों या समुदायों के अधिकारों के बारे में प्रश्न उठ सकते हैं।
- **संरक्षण बनाम व्यावसायीकरण:** DSI या तो संरक्षण में योगदान दे सकता है या जैव विविधता के शोषण का कारण बन सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जानकारी का उपयोग कैसे किया जाता है और क्या लाभ समान रूप से साझा किए जाते हैं।

संबंधित पहल

- **नागोया प्रोटोकॉल:** जैविक विविधता पर कन्वेंशन का हिस्सा, यह प्रोटोकॉल आनुवंशिक संसाधनों से उत्पन्न होने वाले लाभों के निष्पक्ष और न्यायसंगत बंटवारे पर बल देता है, हालांकि यह DSI को पूरी तरह से संबोधित नहीं करता है।
- **कुनमिंग-मॉन्ट्रियल ग्लोबल बायोडायवर्सिटी फ्रेमवर्क (GBF):** यह फ्रेमवर्क, जिसमें लक्ष्य 13 में DSI शामिल है, का उद्देश्य जैव विविधता संरक्षण और लाभ-साझाकरण के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण बनाना है। यह DSI के प्रबंधन में बहुपक्षीय सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।
- **पहुँच और लाभ-साझाकरण (ABS) तंत्र:** विभिन्न ABS फ्रेमवर्क DSI सहित आनुवंशिक संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। हालांकि, DSI के लिए मानकीकृत अंतर्राष्ट्रीय विनियमन अभी भी प्रगति पर हैं।

Source: [DTE](#)

उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट 2024(Emissions Gap Report 2024)

सन्दर्भ

- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का वार्षिक प्रकाशन, उत्सर्जन अंतराल रिपोर्ट जारी कर दी गई है।

परिचय

- यह UNEP's की स्पॉटलाइट रिपोर्ट है जिसे वार्षिक जलवायु वार्ता से पहले प्रत्येक वर्ष लॉन्च किया जाता है।
- यह इस बात पर नज़र रखती है कि वर्तमान देशों की प्रतिबद्धताओं के साथ वैश्विक उत्सर्जन किस दिशा में बढ़ रहा है और तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने के लिए उन्हें किस दिशा में बढ़ना चाहिए।
- प्रत्येक संस्करण में उत्सर्जन अंतर को समाप्त करने के तरीकों की खोज की जाती है।
- रिपोर्ट में देशों के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) का मूल्यांकन किया गया है, जिसे उन्हें प्रत्येक पाँच वर्ष में अपडेट करना होता है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि अगर इन योजनाओं को पूरी तरह से लागू किया गया तो विश्व कितनी गर्म हो सकती है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के बारे में

- यह 1972 में स्थापित संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में अग्रणी पर्यावरण प्राधिकरण है।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा UNEP का नीति-निर्माण अंग है।
- **मुख्यालय:** नैरोबी, केन्या।
- **प्रमुख रिपोर्ट:** वैश्विक पर्यावरण आउटलुक, पर्यावरण अपराध रिपोर्ट का उदय, वायु गुणवत्ता पर कार्रवाई, फ्रंटियर्स रिपोर्ट, अनुकूलन अंतराल रिपोर्ट।

प्रमुख निष्कर्ष

- 1.5 डिग्री लक्ष्य:** इसने चेतावनी दी कि वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस के अंदर रखने का पेरिस समझौते का उद्देश्य कुछ वर्षों में समाप्त हो जाएगा।
 - 1.5 डिग्री लक्ष्य को बनाए रखने के लिए न्यूनतम 42 प्रतिशत की कमी की आवश्यकता थी। लक्ष्य को जीवित रखने के लिए कटौती को 2035 तक 57 प्रतिशत तक बढ़ाना होगा।
 - 2023 में वैश्विक उत्सर्जन पिछले वर्ष की तुलना में 1.3 प्रतिशत अधिक था।
 - शीर्ष तीन उत्सर्जकों में से दो चीन और भारत के ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में क्रमशः 5.2 प्रतिशत और 6.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
- भविष्य की भविष्यवाणियाँ:** वर्तमान जलवायु क्रियाएँ, यहाँ तक कि सबसे आशावादी परिदृश्य में भी, 2019 के स्तर पर 2030 तक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को केवल 10 प्रतिशत तक कम कर सकती हैं।
 - जब तक देश दो वर्षों में वैश्विक उत्सर्जन को कम करने के लिए अपने जलवायु कार्यों को प्रभावशाली रूप से नहीं बढ़ाते, तब तक 2 डिग्री सेल्सियस की सीमा का उल्लंघन होने का खतरा रहेगा।
 - ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में प्रभावशाली कटौती के बिना, विश्व को अपरिहार्य 3.1 डिग्री सेल्सियस तापमान वृद्धि का सामना करना पड़ सकता है।



- अनुशंसाएँ:**
 - उत्सर्जन में कमी लाने के लिए निवेश में भारी वृद्धि की आवश्यकता है।
 - सौर फोटोवोल्टिक और पवन ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने से 2030 में कुल कमी में 27 प्रतिशत और 2035 तक 38 प्रतिशत की कमी आ सकती है।

- इसके अतिरिक्त, वन संरक्षण दोनों वर्षों में आवश्यक कटौती का लगभग 20 प्रतिशत प्रदान कर सकता है।
- अन्य प्रभावी रणनीतियों में ऊर्जा दक्षता को बढ़ाना, विभिन्न क्षेत्रों का विद्युतीकरण करना तथा इमारतों, परिवहन एवं उद्योग में जीवाश्म ईंधन से संक्रमण शामिल है।

भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) लक्ष्य

- भारत 2030 तक निम्नलिखित लक्ष्य हासिल करना चाहता है:
 - **उत्सर्जन में कमी:** भारत का लक्ष्य 2005 के स्तर की तुलना में 2030 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम करना है।
 - **नवीकरणीय ऊर्जा:** देश 2030 तक अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 50% गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से प्राप्त करना चाहता है, जिसका लक्ष्य 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करना है।
 - **कार्बन सिंक:** भारत वनरोपण और पुनर्वनरोपण प्रयासों के माध्यम से 2.5 से 3 बिलियन टन CO₂ समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाने की योजना बना रहा है।

Source: IE

अंतरिक्ष में निजी क्षेत्र की भागीदारी

समाचार में

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों को समर्थन देने के लिए 1,000 करोड़ रुपये के उद्यम पूंजी कोष को मंजूरी दी है।

ऐतिहासिक घटनाक्रम

- भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम पाँच दशकों से भी अधिक समय में विकसित हुआ है, जिसमें आम आदमी की सेवा के लिए अनुप्रयोग-संचालित पहलों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) चाँद और सूरज के मिशनों के साथ आगे बढ़ रहा है, और अंतरिक्ष दूरबीनों और मानवयुक्त मिशनों की योजना बना रहा है।
- ISRO ने अंतरिक्ष घटकों के निर्माण के लिए एचएएल, एंट्रिक्स और गोदरेज एयरोस्पेस जैसी सार्वजनिक और निजी दोनों फर्मों के साथ भागीदारी की है।
 - ISRO के उत्पादों का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यावसायीकरण करने के लिए एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन (1992) की स्थापना की गई थी।
- ISRO के विकास को एक उभरते निजी अंतरिक्ष क्षेत्र द्वारा पूरित किया जाता है।
- ISRO अब वैश्विक स्तर पर छह सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक है, जो GEO संचार और LEO रिमोट सेंसिंग उपग्रहों के एक महत्वपूर्ण बेड़े का संचालन करती है।

निजी क्षेत्र की भागीदारी

- पिछले कुछ वर्ष भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं।
- 2010 के दशक की शुरुआत से अब तक 200 से ज्यादा स्टार्ट-अप्स उभरे हैं, जो सैटेलाइट डिज़ाइन, निर्माण और लॉन्च सेवाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।
- प्रमुख स्टार्ट-अप्स में शामिल हैं: ध्रुव स्पेस: कस्टम सैटेलाइट डिज़ाइन और ग्राउंड स्टेशन।
 - **स्काईरूट एयरोस्पेस:** निजी लॉन्च वाहन और सफल लॉन्च।
 - स्काईरूट एयरोस्पेस ने 2022 में पहला भारतीय निजी रॉकेट, विक्रम-एस लॉन्च किया।

- **अग्रिकुल कॉसमॉस:** अभिनव मोबाइल लॉन्चपैड और प्रणोदन प्रणाली।
 - अग्रिकुल कॉसमॉस ने 2024 में अपने निजी लॉन्च पैड से पूरी तरह से 3डी-प्रिंटेड इंजन के साथ विश्व का पहला रॉकेट लॉन्च किया।
- **मनस्तु स्पेस:** प्रणोदन और उपग्रह सेवाओं के लिए हरित प्रौद्योगिकी।

नियामकीय ढांचा:

- **IN-SPACE:** IN-SPACE अंतरिक्ष विभाग के तहत एक स्वायत्त एजेंसी है, जिसे अंतरिक्ष गतिविधियों में निजी क्षेत्र की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए 2020 में स्थापित किया गया था।
 - IN-SPACE ने NGE के साथ लगभग 45 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं और सीड फंड स्कीम एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पहल जैसी विभिन्न सहायक योजनाओं को लागू किया है।
- **अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन:** इस फाउंडेशन का उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ाना है, जिसका अनुमानित बजट पाँच वर्षों में ₹50,000 करोड़ है, जो बड़े पैमाने पर गैर-सरकारी वित्तपोषण से प्राप्त होता है।
- **राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति (2021):** भू-स्थानिक डेटा तक निजी पहुँच की सुविधा प्रदान करती है।
- **भारतीय अंतरिक्ष नीति (2023):** निजी कंपनियों को उपग्रहों और प्रक्षेपण वाहनों को संचालित करने की अनुमति देती है, जिससे बाजार में भागीदारी बढ़ती है।
- **FDI नीति:** भारतीय सरकार अंतरिक्ष क्षेत्र में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति देती है, जिससे विदेशी वित्तपोषण आकर्षित होती है।
 - **संशोधन:** केंद्र ने अपनी FDI नीति में संशोधन किया है, जिसके तहत उपग्रह निर्माण और संचालन के लिए 74% तक FDI, प्रक्षेपण वाहनों, अंतरिक्ष बंदरगाहों और संबंधित प्रणालियों के लिए 49% तक FDI और उपग्रहों, जमीन और उपयोगकर्ता खंडों के लिए घटकों और प्रणालियों/उप-प्रणालियों के निर्माण के लिए 100% FDI की अनुमति दी गई है।
 - उपर्युक्त सीमाओं से परे इन खंडों में सरकारी मार्ग से निवेश की अनुमति है।
- **न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL):** स्वदेशी उत्पादन को बढ़ाने और घरेलू ग्राहकों को समर्थन देने के लिए 2019 में स्थापित किया गया।

नव गतिविधि

- IN-SPACE ने भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के विकास का समर्थन करने के लिए 1000 करोड़ रुपये के वेंचर कैपिटल फंड का प्रस्ताव दिया है, जिसका वर्तमान मूल्य 8.4 बिलियन डॉलर है, जिसका लक्ष्य 2033 तक 44 बिलियन डॉलर तक पहुंचना है।
- इस निधि को पांच वर्षों में तैनात किया जाएगा, जिसकी शुरुआत 2025-26 वित्तीय वर्ष में ₹150 करोड़ से होगी, उसके बाद अगले तीन वर्षों के लिए वार्षिक ₹250 करोड़ और 2029-30 में ₹100 करोड़ होंगे।
- यह SEBI नियमों के तहत एक वैकल्पिक निवेश कोष के रूप में कार्य करेगा, स्टार्टअप्स को शुरुआती चरण की इक्विटी प्रदान करेगा और उन्हें आगे के निजी इक्विटी निवेशों के लिए स्केल करने में सक्षम करेगा।
- प्रस्तावित निधि से पूरे अंतरिक्ष आपूर्ति श्रृंखला-अपस्ट्रीम, मिडस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम में स्टार्टअप्स का समर्थन करके भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

भविष्य की संभावनायें:

- निजी क्षेत्र के विकास के बावजूद, ISRO प्रमुख खिलाड़ी बना हुआ है, जो कई विदेशी उपग्रहों को लॉन्च कर रहा है और विभिन्न महत्वपूर्ण मिशनों का नेतृत्व कर रहा है।

- इसका लक्ष्य 2040 तक भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को 8 बिलियन डॉलर से बढ़ाकर 100 बिलियन डॉलर करना है, जिसमें ISRO का निरंतर नेतृत्व और निजी स्टार्ट-अप के साथ सहयोग शामिल है।
- इस क्षेत्र की भविष्य की सफलता मजबूत नीति कार्यान्वयन, सहायक पारिस्थितिकी तंत्र और सरकार, ISRO और निजी संस्थाओं के बीच सहज सहयोग पर निर्भर करती है ताकि घरेलू एवं वैश्विक स्तर पर भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं को साकार किया जा सके।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

सिल्क रूट पर उज्बेकिस्तान में दो नए शहरों की खोज

सन्दर्भ

- पुरातत्वविदों को सिल्क रूट पर पूर्वी उज्बेकिस्तान के पहाड़ों में दो मध्ययुगीन शहरों, तुगुनबुलक और ताशबुलक के अवशेष मिले हैं।

परिचय

- परंपरागत रूप से, सिल्क रूट मैदानों और नदी घाटियों से जुड़ा हुआ था, जिन्हें व्यापार के लिए सबसे सुलभ मार्ग माना जाता था।
- हालांकि, उज्बेकिस्तान के ऊंचे क्षेत्रों में बसे इन नए शहरों से पता चलता है कि व्यापारी अधिक पहाड़ी क्षेत्रों से भी गुजरते थे।



सिल्क रूट क्या है?

- सिल्क रूट, जिसे सिल्क रोड के नाम से भी जाना जाता है, व्यापार मार्गों का एक प्राचीन नेटवर्क था जो पूर्व (मुख्य रूप से चीन) को पश्चिम (यूरोप और भूमध्य सागर) से जोड़ता था।
- 6,000 किलोमीटर से अधिक लंबे इस मार्ग ने माल, विशेष रूप से रेशम, मसालों, कीमती धातुओं, चीनी मिट्टी की चीज़ों और अन्य मूल्यवान वस्तुओं के व्यापार को सुविधाजनक बनाया।
- इसने सदियों से सभ्यताओं के बीच सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Source: [BBC](#)

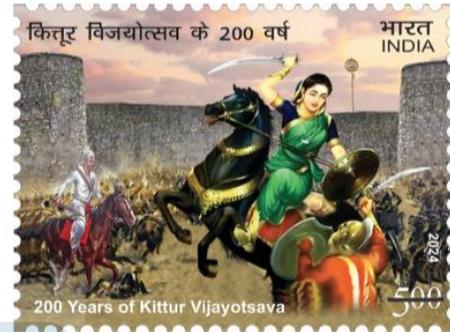
कित्तूर विजयोत्सव के 200 वर्ष

समाचार में

- कित्तूर विजयोत्सव की 200वीं वर्षगांठ मनाने के लिए एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया, जो 1824 में ब्रिटिश शासन के खिलाफ रानी चन्नम्मा की जीत का प्रतीक है।

रानी चन्नम्मा के बारे में

- उन्हें एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मनाया जाता है और वे भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक हैं।
- **प्रारंभिक जीवन:** 23 अक्टूबर, 1778 को कर्नाटक के काकती में जन्मी, उन्हें छोटी उम्र से ही युद्ध कौशल का प्रशिक्षण दिया गया था।
 - कित्तूर के राजा मल्लसरजा देसाई से विवाह करने के बाद, वे रानी बनीं और उनका एक बेटा हुआ, जिसकी मृत्यु 1824 में हो गई।
- **अंग्रेजों के साथ कित्तूर संघर्ष:** अपने बेटे की मृत्यु के बाद, उन्होंने शिवलिंगप्पा को अपना उत्तराधिकारी बनाया, लेकिन अंग्रेजों ने गोद लेने से मना कर दिया, जिससे संघर्ष हुआ।
 - उन्होंने 1824 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया, जिसमें डॉक्टिन ऑफ लैप्स का विरोध किया गया।
 - उन्होंने युद्ध का नेतृत्व किया, जिसमें ब्रिटिश सेना को अत्यंत हानि हुई।
 - बाद की लड़ाई में, चन्नम्मा की संख्या कम थी और अंततः अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ लिया, जिसके कारण उन्हें बैलहोंगल किले में कैद कर लिया गया।
- **मृत्यु:** रानी चन्नम्मा की मृत्यु 21 फरवरी, 1829 को कारावास में हुई।
 - कित्तूर उत्सव और कन्नड़ राज्योत्सव के दौरान उनकी समाधि स्थल का रखरखाव और सम्मान किया जाता है।
- **विरासत:** उनके प्रतिरोध ने नाटकों, लोकगीतों और कहानियों को प्रेरित किया, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बहादुरी का प्रतीक बन गया।
 - रानी चन्नम्मा की प्रतिमाओं का भारतीय संसद सहित विभिन्न स्थानों पर अनावरण किया गया, और उनके नाम पर एक ट्रेन बैंगलोर और कोल्हापुर को जोड़ती है।
 - "कित्तूरू चन्नम्मा" नामक एक फिल्म बनाई गई, जिसमें उनके जीवन और संघर्षों को दर्शाया गया।
 - 1824 से, उनके वीर विद्रोह का सम्मान करने के लिए प्रत्येक वर्ष अक्टूबर में 'कित्तूर उत्सव' मनाया जाता है।



Source:PIb

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना अगले मुख्य न्यायाधीश नियुक्त

सन्दर्भ

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने न्यायमूर्ति संजीव खन्ना को भारत का 51वां मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया।

संवैधानिक प्रावधान

- भारत के संविधान में मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति के लिए किसी प्रक्रिया का उल्लेख नहीं है।
 - संविधान का अनुच्छेद 124 (1) के अनुसार, "भारत का एक उच्चतम न्यायालय होगा जिसमें भारत का एक मुख्य न्यायाधीश होगा।"
- संविधान के अनुच्छेद 124 के खंड (2) के अनुसार, उच्चतम न्यायालय के प्रत्येक न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाएगी। इस प्रकार, संवैधानिक प्रावधान के अभाव में, मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति की प्रक्रिया परंपरा पर निर्भर करती है।

परम्परा क्या है?

- निवर्तमान मुख्य न्यायाधीश अपने उत्तराधिकारी की सिफारिश एक ऐसी प्रक्रिया के तहत करते हैं, जो पूरी तरह से वरिष्ठता पर आधारित होती है।
- हालांकि, वरिष्ठता उम्र से नहीं, बल्कि देश की शीर्ष अदालत में न्यायाधीश के कार्यकाल के आधार पर निर्धारित होती है।

पात्रता

- भारतीय नागरिक होने के अलावा, व्यक्ति को;
 - कम से कम पांच वर्ष तक किसी उच्च न्यायालय या दो या अधिक ऐसे न्यायालयों का न्यायाधीश रहा हो या,
 - कम से कम दस वर्ष तक किसी उच्च न्यायालय या दो या अधिक ऐसे न्यायालयों का अधिवक्ता रहा हो या
 - राष्ट्रपति की राय में, एक प्रतिष्ठित विधिवेत्ता हो।

मुख्य न्यायाधीश की पदच्युति प्रक्रिया

- उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश को संसद के प्रत्येक सदन द्वारा उस सदन की कुल सदस्यता के बहुमत और उस सदन के उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम दो-तिहाई बहुमत द्वारा समर्थित अभिभाषण के बाद पारित राष्ट्रपति के आदेश के अलावा उसके पद से नहीं हटाया जाएगा।
- उसी सत्र में राष्ट्रपति को हटाने के लिए प्रस्तुत अभिभाषण को दो में से किसी एक आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए: सिद्ध कदाचार या अक्षमता।

Source: [TH](#)

ग्राम पंचायत स्तर पर मौसम पूर्वानुमान

सन्दर्भ

- सरकार ने नई दिल्ली में ग्राम पंचायत स्तर पर मौसम पूर्वानुमान की शुरुआत की।

परिचय

- यह पहल ग्राम पंचायतों को पांच दिवसीय मौसम पूर्वानुमान और प्रत्येक घंटे अपडेट प्रदान करेगी, जिससे ग्रामीण समुदाय कृषि गतिविधियों की बेहतर योजना बना सकेंगे और मौसम संबंधी जोखिमों के लिए तैयार हो सकेंगे।
- इसे पंचायती राज मंत्रालय (MoPR) और भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) के बीच सहयोग से विकसित किया गया है।

- यह पहल ई-ग्रामस्वराज, मेरी पंचायत ऐप और ग्राम मंच के माध्यम से मौसम संबंधी अपडेट प्रदान करेगी।
 - ई-ग्रामस्वराज प्लेटफॉर्म प्रोजेक्ट ट्रैकिंग और संसाधन प्रबंधन में सहायता करता है, जबकि मेरी पंचायत ऐप सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देता है।
 - ग्राम मंच भू-स्थानिक जानकारी प्रदान करता है, जो पंचायत स्तर पर स्थानिक योजना और विकास परियोजनाओं में सहायता करता है।

Source: [AIR](#)

विश्व पोलियो दिवस

सन्दर्भ

- प्रत्येक वर्ष 24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसकी स्थापना रोटरी इंटरनेशनल द्वारा जोनास साल्क के जन्म की स्मृति में की गई थी, जिन्होंने 1950 के दशक में इस रोग के विरुद्ध टीका विकसित करने वाली पहली टीम का नेतृत्व किया था।

परिचय: पोलियोमाइलाइटिस (पोलियो)

- यह एक अत्यधिक संक्रामक रोग है जो एक वायरस के कारण होता है जो तंत्रिका तंत्र पर आक्रमण करता है और कुछ ही घंटों में पूर्ण पक्षाघात का कारण बन सकता है।
- **संचरण:** व्यक्ति-से-व्यक्ति के माध्यम से मुख्य रूप से मल-मौखिक मार्ग से फैलता है या, कम बार, एक सामान्य वाहन (जैसे दूषित पानी या भोजन) द्वारा फैलता है और आंत में गुणा करता है।
- **भेद्यता:** मुख्य रूप से 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे। हालाँकि, किसी भी उम्र का कोई भी व्यक्ति जो टीका नहीं लगवाता है, वह इस बीमारी से संक्रमित हो सकता है।
- **लक्षण:** बुखार, थकान, सिरदर्द, उल्टी, गर्दन में अकड़न और अंगों में दर्द।
- **रोकथाम और उपचार:** पोलियो का कोई उपचार नहीं है, इसे केवल रोका जा सकता है। दो टीके उपलब्ध हैं: मौखिक पोलियो टीका और निष्क्रिय पोलियो टीका।

क्या आप जानते हैं?

- मार्च 2014 में भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया गया और यह अब भी जारी है। जनवरी 2011 में भारत में पोलियो का आखिरी मामला पश्चिम बंगाल के हावड़ा में सामने आया था।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान विश्व के एकमात्र ऐसे देश हैं जहाँ पोलियो अभी भी महामारी बना हुआ है।

Source: [IE](#)

शिक्षा पर भारत का व्यय: यूनेस्को रिपोर्ट

समाचार में

- यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, शिक्षा पर भारत का व्यय चीन और जापान जैसे देशों से भी अधिक है।

स्थिति और निष्कर्ष

- भारत ने शिक्षा के लिए अपने सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 4.1% से 4.6% आवंटित किया, जो संयुक्त राष्ट्र शिक्षा 2030 फ्रेमवर्क फॉर एक्शन के साथ संरेखित है, जो 4% से 6% की सीमा की सिफारिश करता है।
- भारत का शिक्षा पर सरकारी व्यय कुल सार्वजनिक व्यय के 13.5% और 17.2% के बीच उतार-चढ़ाव करता रहा, जिससे शिक्षा 2030 का लक्ष्य 15-20% पूरा हुआ।
- शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय का वैश्विक औसत 2010 में 13.2% से घटकर 2020 में 12.5% हो गया, जिसमें COVID-19 के बाद और भी गिरावट देखी गई।
- **तुलना:** यूनेस्को सांख्यिकी संस्थान की रिपोर्ट बताती है कि औसत शिक्षा निवेश में वैश्विक गिरावट की तुलना में भारत का निवेश स्थिर है।
 - भारत मध्य और दक्षिणी एशिया के कई पड़ोसी देशों की तुलना में शिक्षा में अधिक निवेश करता है, जो सामान्यतः सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 4-6% आवंटित करते हैं।
 - अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान जैसे देश शिक्षा व्यय में पिछड़ रहे हैं। मध्य और दक्षिणी एशियाई देशों में, भारत का शिक्षा व्यय केवल भूटान (7.5%), कजाकिस्तान (7.2%), मालदीव (4.7%), ताजिकिस्तान (5.7%) और उज्बेकिस्तान (5.2%) से कम है।

Source :Air

गृह मंत्रालय ने 'साइबर कमांडो की विशेष शाखा' बनाने के लिए परामर्श जारी किया

सन्दर्भ

- बढ़ते साइबर खतरों के बीच, गृह मंत्रालय (MHA) ने साइबर कमांडो की एक विशेष विंग की स्थापना के संबंध में सभी राज्यों को एक परामर्श जारी की।

परिचय

- जनवरी 2023 और 2024 में आयोजित DGPs और IGPs सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री ने इस विशेष विंग के गठन की सिफारिश की थी।
- इस पहल की देखरेख करने वाले भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) का लक्ष्य अगले पांच वर्षों में 5,000 साइबर कमांडो तैनात करना है।
- ये कमांडो राज्य और केंद्रीय पुलिस संगठनों का समर्थन करेंगे, जो विशेष रूप से डिजिटल फोरेंसिक, घटना प्रतिक्रिया और ICT बुनियादी ढांचे की सुरक्षा जैसे साइबर सुरक्षा कार्यों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।
- ये साइबर कमांडो अपने-अपने पुलिस संगठनों के अंदर कार्य करेंगे। वर्तमान में, 246 साइबर कमांडो का पहला बैच IIT मद्रास, IIT कानपुर और गांधीनगर में राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय (NFSU) सहित विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों में छह महीने के कठोर व्यावहारिक प्रशिक्षण से गुजर रहा है।

आवश्यकता एवं महत्व

- हाल ही में, महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों और एयरलाइनों को निशाना बनाकर साइबर अपराधों में वृद्धि हुई है, जिससे महत्वपूर्ण व्यवधान, सुरक्षा खतरा और वित्तीय हानि होती है।
 - इनमें से अधिकांश खतरे वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (VPNs) या डार्क वेब ब्राउज़र का उपयोग करके बनाए गए थे, जो जांच एजेंसियों द्वारा पता लगाने से बचते थे।
- डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले के मामले भी बढ़ रहे हैं, जहां साइबर अपराधियों ने व्यक्तियों को "डिजिटल रूप से हिरासत में लिया" और उन्हें पैसे देने के लिए मजबूर किया।

Source: [DDNews](#)

सिम्बेक्स 2024(SIMBEX 2024)

सन्दर्भ

- सिंगापुर भारत समुद्री द्विपक्षीय अभ्यास (सिम्बेक्स) का 31वां संस्करण विशाखापत्तनम में पूर्वी नौसेना कमान में शुरू हुआ।

परिचय

- 1994 में 'एक्सरसाइज लायन किंग' के रूप में शुरू हुआ सिम्बेक्स, भारतीय नौसेना द्वारा किसी भी अन्य देश के साथ सबसे लंबे समय तक चलने वाला नौसैनिक अभ्यास होने का गौरव रखता है।
- सिम्बेक्स 2024 दो चरणों में आयोजित किया जाएगा - विशाखापत्तनम में हार्बर चरण और बंगाल की खाड़ी में समुद्री चरण।
- इस वर्ष के संस्करण का उद्देश्य अंतर-संचालन को बढ़ाकर, समुद्री डोमेन जागरूकता में सुधार करके तथा सामान्य समुद्री चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहयोग को बढ़ावा देकर भारत और सिंगापुर के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करना है।

क्या आप जानते हैं?

- सिंगापुर सेना और भारतीय सेना द्विपक्षीय अभ्यास बोल्ड कुरुक्षेत्र तथा अग्नि वारियर का आयोजन करती हैं।

Source: [PIB](#)

जलकुंभी (Water Hyacinth)

समाचार में

- आंध्र प्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम जलकुंभी से पर्यावरण अनुकूल उत्पाद और सजावटी सामग्री बनाने में कारीगरों को प्रशिक्षण देने की योजना बना रहा है।

जलकुंभी के बारे में

- जलकुंभी को तेलुगु में गुर्रापुडेका कहा जाता है, यह एक गैर-देशी जलीय आक्रामक पौधा है।
- इसका तना रेशेदार होता है और इसका उपयोग विभिन्न हस्तशिल्प वस्तुओं को बनाने में किया जाता है, जिसमें हैंडबैग, टेबल मैट, टोकरियाँ और सजावटी सामान शामिल हैं।
- यह भारी धातुओं और प्रदूषकों को अवशोषित करता है, जिससे यह अपशिष्ट जल उपचार में उपयोगी हो जाता है, हालाँकि उपयोग के बाद इसके निपटान के लिए सावधानीपूर्वक प्रबंधन की आवश्यकता होती है।
- जलकुंभी सूर्य के प्रकाश को रोक सकती है और जल निकायों में ऑक्सीजन को कम कर सकती है, जिससे मछलियों तथा अन्य जलीय जीवन को हानि पहुँचती है।

Source: TH

